P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

हस्तकला विकास हेतु– उत्तर प्रदेश में लोककला व्यवसायों एवं उत्पादों की योजनाएँ

अमिता शुक्ला
प्रवक्ता,
चित्रकला विभाग,
ओंकारेश्वर सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज,
जवाहर नगर,कानपुर

सारांश

प्राचीनकाल से ही लोककला व्यवसाय के क्षेत्र में भारत विश्वविख्यात रहा है। सूती लोक कलात्मक वस्त्रों की उत्पत्ति उत्तर भारत में हुई। जिसके प्रमाण अभी तक संरक्षित हैं। आज से बीस–पच्चीस शताब्दी पूर्व भी भारतीय लोक कलात्मक वस्त्र विदेशियों को निर्यात किये जाते थे और यह सिलसिला प्राचीनकाल से वर्तमान काल तक चलता रहा है।[1]

मुख्य शब्द : उत्तर प्रदेश हस्तकला, तकनीकी, माध्यम, व्यवसाय एवं योजनाएँ।

प्रस्तावना

लोककला व्यवसायों का स्वरूप एवं प्रमुख केन्द्र

विविध सभ्यताओं के साथ–साथ विकसित होती भारतीय आलेखन लोककला वर्तमान समय में यह पूर्ण परिपक्व रूप धारण कर चुकी है। देश की सभ्यता और संस्कृति के रंग–बिरंगे स्वरूप का सृजन करने में विविध क्षेत्र–परिक्षेत्रों में विकसित होती रंग–बिरंगी वस्त्र परम्पराओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है जिसका बहुत कुछ श्रेय उनकी आलेखन प्रवृत्तियों की वैविध्यपूर्ण विधियों और संयोजनों को प्राप्त है। सैकड़ों–हजारों वर्षों के विकास चक्र में तीलिया गूँथते भारतीय मानव ने देश के लगभग सभी छोटे–बड़े क्षेत्रों में अपनी जिन विविधतापूर्ण लोक आलेखन परम्पराओं को विकसित किया वे अब तक अपने स्थान पर पूर्ववत कायम है। आधुनिक भारतीय लोक आलेखन कला के स्वरूप निर्धारण में इन परम्परागत विधियों से रचे–बुने गये आकारों और उनके विविध संयोजनों ने अत्यधिक सहायता प्रदान की, जिसके कारण इस मशीनी युग में भी परम्परागत आलेखनीकृत सौन्दर्यपूर्ण व्यवसाय ने विश्व की लोक आलेखन कलाओं में अपनी विशिष्ट पहचान कायम की है। औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप इसमें नित–नवीन आकार जुड़ते गये जिनकी लोकाभिव्यक्ति के लिये अनेक नवीन विधियों का भी विकास हुआ। मानव की परिवर्तनशील आलेखन अभिव्यक्ति ने इस कला को परम्परा से जोड़े रखते हुये उसे गतिशीलता भी प्रदान की। सांस्कृतिक परम्पराओं से जुड़े इस प्रगतिशील वातावरण में भारत की आधुनिक लोककला के एक अत्यन्त विस्तृत, अति सौन्दर्यपूर्ण और सौम्य स्वरूप का विकास हुआ। विभिन्न विधियों के प्रशिक्षण का कार्य कर रही कुछ संस्थायें भारतीय कारीगरों को प्रोत्साहित कर उनके द्वारा निर्मित कलात्मक वस्त्रों के विपणन का कार्य भी कर रहीं हैं। वास्तव में हमारे देश के लगभग प्रत्येक गॉवों व शहरों में लोक डिजाइन का कार्य घरेलू कारीगरों के द्वारा ही किया जाता है। फिर चाहे वो बुनकरी का क्षेत्र हो, छापाकारी या कशीदाकारी का, अधिकॉश महिलायें अपने शहरों की परम्परागत विधियों के द्वारा सौन्दर्य पूर्ण लोक कलात्मक आलेखन उकेरती अथवा बुनती व छापती नजर आती हैं। क्षेत्र विशेष अथवा ग्रामीण अंचलों के कारीगर मिलकर छोटी–छोटी सभाओं अथवा हथकरघा केन्द्रों का निर्माण करते हैं। ये सभायें अपने क्षेत्र की हस्तशिल्प संस्था अथवा किसी बड़ी विक्रय कम्पनी से जुड़ी होती हैं अपने कारीगरों द्वारा सजाये–सॅवारें गये विक्रय का कार्य ये बड़ी संस्थाऍ ही करती हैं और साथ ही अपने कारीगरों की सुख–सुविधाओं का ध्यान रखते हुए उनकी आर्थिक सहायता कर इस क्षेत्र में उनके कार्य को प्रोत्साहित भी करती हैं।[2] निम्न स्थानों पर व्यवसायों की परम्परागत लोक कलाओं को निम्न प्रकार से उद्योग का रूप दिया गया है–

1. नई दिल्ली का विभाग परम्परागत भारतीय आलेखन युक्त कला को संकलित कर उनमें नवीनता और गतिमयता को प्रवाहित कर आधुनिक धारा से जोड़ने का महत्वपूर्ण प्रयास कर रही हैं। देश–विदेश के अनेक बड़े शहरों में इनकी शाखाऍ हैं
2. भारतीय हस्तशिल्प और हथकरघा निर्यात संस्थान परम्परागत विधियों से सजे सौन्दर्यपूर्ण भारतीय लोककला को संरक्षित करता है। उनके निर्यात के

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

3. लिये नये–बाजारों को तलाश करता है साथ ही बाजार मॉग के अनुसार उनमें नवीनता लाने के प्रयास कर लोककला के क्षेत्र को विस्तार देने का सराहनीय कार्य कर रहा है।
4. हस्तशिल्प और हथकरघा निर्मित सामग्री के निर्यात से जुड़ी अनेक सरकारी अथवा गैर सरकारी संस्थाएँ इस केन्द्र के अर्न्तगत कार्य कर रही हैं। देश–विदेश के अनेक शहरों में इनके केन्द्र स्थापित हैं।
5. सेन्ट्रल काटेज इन्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड कुटीर उद्योग से सम्बन्धित हथकरघा और हस्तशिल्प केन्द्रों को संचालित करता है। बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, जयपुर जैसे बड़े–बड़े शहरों में इनकी शाखाएँ हैं।
6. ऑल इंडिया हैण्डलूम फैब्रिक्स मार्केटिंग को आपरेटिव सोसाइटी लिमिटस अखिल भारतीय हथकरघा बोर्ड द्वारा संचालित संस्थान है। बम्बई, दिल्ली, मद्रास, कलकत्ता, बैंगलौर, अहमदाबाद, चंडीगढ़, हैदराबाद, बड़ौदा, विशाखापटनम् आदि शहरों में इनकी अपनी हथकरघा बुनकर संस्थाएँ और हथकरघा केन्द्र हैं। जहाँ से वे अपने कारीगरों द्वारा आलेखित व्यवसाय का विक्रय करते हैं साथ ही विदेशों में भी इनकी शाखायें एवं विक्रय केन्द्र हैं। लोककला व्यवसाय आलेखन सामग्री में कुछ विशिष्ट विधाओं के कारीगरों की अखिल भरतीय सभायें कार्यरत हैं–
7. ऑल इंडिया कार्पेट मैन्यूफैक्चरिंग एसोशिएशन, भदोही, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।
8. ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ जरी इंडस्ट्री, सेफ डिपाजिट चेम्बर्स, सूरत, गुजरात।
9. ऑल इंडिया टेक्सटाइल हैंड प्रिंटिंग फेडरेशन प्रसाद चेम्बर्स, स्वदेशी मिल स्टेट, बम्बई।[3]

डेवलपमेन्ट कमिश्नर फॅार हैण्डलूम्स

भारत सरकार की मिनिस्ट्री ऑफ कामर्स के अन्तर्गत कार्यरत हैण्डलूम्स डेवलपमेन्ट कमिश्नर देश के लगभग सभी देशों में कार्यरत विवर्स सर्विस सेंटर की शाखाएँ तथा हथकरघा संस्थान इसके अर्न्तगत हस्तनिर्मित सामग्री की भारतीय परम्पराओं के संरक्षण और उनके विकास का महत्वपूर्ण कार्य कर रहें हैं।

विवर्स सर्विस सेन्टर

देश के प्रत्येक राज्य की राजधानी में केन्द्र शासित राज्यों में तथा बनारस के अति महत्वपूर्ण केन्द्रों में स्थित, विवर्स सर्विस सेन्टर अपने–अपने क्षेत्रों की परम्पराओं, कताई, बुनाई, रंगाई, छपाई, कशीदाकारी आदि को संरक्षित एवं विकसित करने का कार्य सफलता पूर्वक कर रहें हैं।[4]

नेशनल हैण्डलूम डिजाइन कलेक्शन

विविध क्षेत्रों में अलग–अलग रूपों में प्रचलित भारतीय लोककला के सौन्दर्य पूर्ण पारम्परिक तथा नवीन आकार संयोजनों एवं उनकी विभिन्न विधियों को संकलित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। कुछ सरकारी संस्थान भी है जो कि भारत की परम्परागत लोक व्यवसायी कलाओं की अमूल्य निधि को संरक्षित और पोषित करती रहती है। इस विशाल देश के कोने–कोने में फैली असंख्य प्राचीन लोक कलाओं का संकलन, उनका अध्ययन कर उनके परम्परागत सौन्दर्य को बरकरार रखते हुये आधुनिकता से जोड़ने का कार्य निरन्तर करती रहती है। ये सभी संस्थाएँ न केवल परम्परागत कलाओं का संकलन करती है वरन उनके विकास के लिये नवीन सरकारी नीतियों का निर्धारण तथा कारीगरों को प्रोत्साहित करने के लिये विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन भी करती हैं और अपनी सहकारी संस्थाओं के माध्यम से उत्पादन के लिये कारीगरों को सुविधा प्रदान कराती है। उत्पादित सामग्री की गुणवत्ता की जॉच–परख का कार्य भी संस्थाओं द्वारा किया जाता हैं। भारतीय लोककला व्यवसायों की प्राचीन परम्परायें हमारी सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग हैं। संस्कृति की प्राचीन काल से चली आ रही इन कलात्मक गतिविधियों के मुख्य श्रोत प्रायः ग्रामीण अंचलों में रहने वाले गरीब, अनपढ़ जन–साधारण के सौन्दर्य प्रिय कलाकार मन में विद्यमान थे। समयान्तराल में पूर्ण विकसित हो ये प्रारम्भिक अभिव्यक्ति स्थान विशेष की व्यवसायी कला अपनी परम्परागत पहचान कायम कर लेती। व्यापार, भ्रमण, शादी–ब्याह आदि अनेक माध्यमों से ये विशेष स्थानिक लोक कलात्मक युक्त वस्तुयें दूसरे स्थान तक जा पहुँचती हैं और वहाँ के निवासियों के मन को लुभा उनकी परम्पराओं के साथ मिलकर नई लोक शैलियों का विकास करते जाते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों ने प्राचीनकाल से ही भारतीय कला के बिखरे मोतियों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया। साथ ही नित परिवर्तनशील मानवीय अभिव्यक्तियों ने प्राचीनता के मध्य भी कला व्यवसायों की नवीनता एवं विकासशीलता को जीवित रखा। सदियों से पोषित, पल्लवित, पुष्पित भारतीय व्यवसायों की लोककला के इस विशाल वट वृक्ष की अनगिनत शाखाओं–उपशाखाओं को व्यवसायों एवं उत्पादों के क्षेत्रों में उजागर किया जाता है।[5]

हस्तकला विकास हेतु उद्योग योजनाओं का विवरण

उत्तर प्रदेश में हस्तशिल्प उद्योग की अपार सफलताएँ एवं संभावनाएं हैं और अपनी परम्परागत शैली के कारण हस्तशिल्प उद्योगों में विशिष्ट स्थान रखता है। जिसकी मॉग अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अधिक है। देश के कुल निर्यात में हस्तशिल्प की सहभागिता लगभग 70 प्रतिशत है। वर्तमान में प्रदेश में लगभग 30 लाख हस्तशिल्पी अनुमानित है। राज्य सरकार ऐसे हस्तशिल्प उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिये अनवरत रूप से प्रयत्नशील रही है तथा इसके समुचित विकास हेतु योजनाबद्ध रूप से निम्न योजनायें चलायी जा रही है।[6]

हस्तशिल्प के प्रमुख उत्पादन केन्द्र एवं निर्यात गन्तव्य स्थलों का विवरण

क्र. सं.	हस्तशिल्प उत्पादों के वर्ग	प्रमुख उत्पादन केन्द्र	निर्यात गन्तव्य स्थल
1	धातुओं की कलात्मक वस्तुएं (बर्तन, मूर्तियॉ एवं सजावट का सामान, ट्राफी, स्मृति चिन्ह)	मुरादाबाद, सम्भल, अलीगढ़, जलेसर, जोधपुर, जयपुर, जैसलमेर, दिल्ली, रिवाड़ी, चेन्नई, बीदर, केरल।	सं. राज्य अमेरिका, जर्मनी, फ्रान्स, मध्य पूर्व के अरब देश।
2	लकड़ी की कलात्मक वस्तुएं (पलंग, फर्नीचर, सजावट का सामान)	सहारनपुर, नगीना, जयपुर, जोधपुर, श्रीनगर, अमृतसर, बंगलौर, मैसूर, चेन्नई, केरल, अहमदाबाद, बहरामपुर, राजकोट, छत्तीसगढ़।	सं. राज्य अमेरिका, जर्मनी, फ्रान्स, मध्य पूर्व के अरब देश।
3	हाथ से छपे लोक कलात्मक वस्त्र, साड़ियॉ, रजाई के लिहाफ, चादर, मेजपोश, पर्दे।	मथुरा, फर्रूखाबाद, जयपुर, जोधपुर, भुज, फरीदाबाद, अमरोहा, सरघना।	सं. राज्य अमेरिका, इंग्लैण्ड, मध्य पूर्व के देश, पूर्वी यूरोप के देश।
4	हथकरघा (साड़ियॉ, चुनरी, रेशम, ऊनी शाल)	सरघना, रानीपुर, बनारस, कांजीवरम, चंदेरी, महेश्वरी, जम्मू–कश्मीर।	सं. राज्य अमेरिका, इंग्लैण्ड, जर्मनी, रूस, खाड़ी के देश।
5	हाथ की कढ़ाई (लहंगे, स्कार्फ, कुर्ते, कमीजे, स्कर्ट, साड़ियॉ)	फर्रूखाबाद, आगरा, जोधपुर, जयपुर, अहमदाबाद, लखनऊ, अमृतसर, धर्मशाला, चम्बा, श्रीनगर, वाराणसी, मुर्शिदाबाद, हैदराबाद।	सं. राज्य अमेरिका, इंग्लैण्ड, जर्मनी, रूस, खाड़ी के देश।
6	टेराकोटा तथा जरी के उत्पाद।	फर्रूखाबाद, बनारस, जयपुर, जोधपुर, बस्तर, सूरत, बरेली, आगरा, अमृतसर, मुर्शिदाबाद, हैदराबाद, तंजौर।	सं. राज्य अमेरिका, इंग्लैण्ड, जापान, खाड़ी के देश।
7	रत्न आभूषण।	जलेसर, दिल्ली, जयपुर, सूरत, अहमदाबाद, राजकोट, मुरादाबाद, कटक, तिरूपति, करीमनगर।	सं. राज्य अमेरिका, जर्मनी इंग्लैण्ड, खाड़ी के देश ईरान।
8	चमड़े की कलात्मक वस्तुयें (पर्स, चप्पल, जूतियॉ, सजावटी सामग्री)	कोल्हापुर, इन्दौर, बाड़मेर, जोधपुर, कानपुर, उन्नाव, आगरा, मण्डी।	सं. राज्य अमेरिका, जर्मनी इंग्लैण्ड, खाड़ी, आशियान।
9	चूड़ियॉ, कंगन, कॉच की कलात्मक वस्तुएं।	फिरोजाबाद, जयपुर, बाड़मेर, जोधपुर,	सं. राज्य अमेरिका, इंग्लैण्ड, खाड़ी के देश।
10	हस्तनिर्मित कालीन।	भदोही, आगरा, हाथरस, कश्मीर, अमृतसर, ग्वालियर।	सं. राज्य अमेरिका, यूरोप, खाड़ी के देश।

अखिल भारतीय हस्तशिल्प सप्ताह का मनाया जाना

यह योजना वर्ष 1961–1962 से प्रारम्भ की गई। प्रदेश के विभिन्न हस्तशिल्पियों द्वारा निर्मित वस्तुओं को लोकप्रियता में उत्तरोत्तर वृद्धि करने के उद्देष्य से प्रत्येक वर्ष विकास आयुक्त भारत सरकार, नई दिल्ली से प्राप्त दिशा–निर्देशों के अनुसार देश एवं प्रदेश में एक साथ दिनांक 8 दिसम्बर से 15 दिसम्बर तक अखिल भारतीय हस्तशिल्प सप्ताह मनाया जाता है। इस अवसर पर हस्तशिल्प वस्तुओं की बिक्री पर विशेष छूट प्रदान की जाती है तथा प्रदर्शनियों, गोष्ठियों, जनपद के ख्याति प्राप्त अनुभवी शिल्पकारों की कार्य शालाओं का भी आयोजन किया जाता है।[7]

हस्तशिल्पियों के प्रशिक्षण तथा कौशल उन्नयन हेतु वर्कशाप योजना

यह योजना 11 वीं पंचवर्षीय योजना में वर्ष 2007–08 से प्रारम्भ की गयी है। हस्तशिल्प क्षेत्र में परम्परागत विधा से हो रहे कार्य को धीरे–धीरे बेहतर तकनीकी से कराना एवं इस हेतु उनके कौशल विकास की दृष्टि से प्रशिक्षण कराना इस योजना का मुख्य उद्देष्य है। यह योजना प्रदेश के हस्तशिल्प बाहुल्य वाले जिलों में संचालित की जाती है। योजनान्तर्गत परम्परागत शिल्पकारों के कौशल उन्नयन हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है, जिसमें नवीनतम तकनीक एवं उपकरणों के उपयोग भी सिखाये जाते हैं। यह प्रशिक्षण भारत सरकार के राष्ट्रीय हस्तशिल्प पुरस्कार व दक्षता पुरस्कार प्राप्त शिल्पकारों तथा विकास आयुक्त हस्तशिल्प द्वारा शिल्पगुरू की उपाधि से अलंकृत शिल्पकारों के घरों पर उन्हीं के व्यक्तिगत निर्देशन व संरक्षण में संचालित किया जाता है।[8]

व्यवसायों में बॉस प्रकृति की अद्भुत मशीन

वर्तमान समय में सरकार आज उत्तर प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में बॉस की उपज बढ़ाने की स्थिति को प्रोत्साहित कर रही है। यह राज्यों की संस्कृति और परम्पराओं में रचा–बसा है। बॉस का इस्तेमाल कलात्मक निर्माण सामग्री के रूप में किया जा रहा है। इससे घरेलू वस्तुएॅ बनाने, हस्तशिल्प के उत्पाद तैयार करने, कागज बनाने आदि में भी इस्तेमाल किया जा रहा है। उदाहरण– असम, मणिपुर, अरुणांचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, सिक्किम और त्रिपुरा आदि माने जाते हैं। चीन

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तथा इंडोनेशिया के सुपर बाजारों में इन्हें तरह–तरह के कलात्मक रूपों में बिकते देखा जा सकता है। भारत में भी बॉस की कोपलें आदिवासी लोगों में व्यवसाय की तरह लोकप्रिय होती जा रही है। देश के राष्ट्रीय बॉस टेक्नोलॉजी मिशन एवं व्यापार विकास मिशन को उम्मीद है कि 2015 तक भारत का बॉस व्यापार बढ़ कर साढ़े पॉच अरब अमरीकी डॉलर का हो जायेगा। सरकार ने इस कार्य योजना को लागू करने का कार्यक्रम बनाया है। जिसके अनुसार बॉस की कलात्मक वस्तुओं को रोजगार सृजन का प्रमुख साधन बनाया जायेगा। ताकि राज्यों के बॉस आधारित उद्योगों में वृद्धि होगी और हस्तशिल्प का खासतौर से कला बाजारों में विकास हो सकेगा। इससे हस्तशिल्प, निर्माण सामग्री और निर्यात को बढ़ावा देने की योजनाओं पर लगाया जायेगा। हाल के वर्षों में बॉस की मॉग व्यवसायों में बढ़ी है। देश–विदेश में इसे फर्नीचर उद्योग के तौर पर देखा जा रहा है। इसका इस्तेमाल लोकप्रिय लकड़ी की जगह इस्तेमाल किये जाने वाले निर्माण उद्योग में बढ़ रहा है। चीन ने इसके बारे में नए–नए शोध किये हैं इसकी उत्पादकता लगभग दस गुना बढ़ गई है। वर्तमान में चीन बॉस और इसके उत्पादों के निर्यात से साढ़े 5 अरब अमरीकी डॉलर कमा रहा है। राष्ट्रीय बॉस मिशन एक केन्द्र प्रायोजित योजना है। इसका सारा खर्च केन्द्र सरकार उठाती है इस मिशन का प्रमुख जोर विशिष्ट बॉस आधारित उत्पादों की निर्यात वृद्धि पर है। इसके जरिये रोजगार सृजन और कौशल विकास पर भी जोर दिया जा रहा है। बॉस का विशेष रूप से राज्यों में बहुत इस्तेमाल होता है अगर केन्द्र, राज्य सरकार बॉस व्यापार बढ़ाने के लिये मिलकर काम करें तो अगले कुछ वर्ष इस क्षेत्र के कला बाजारों के लिये बहुत महत्वपूर्ण हो सकते हैं।[9]

नवाचारों का विवरण

अनेक सुधारों को अपने अन्दर समेटे हुए मशीनों ने रुपांकन, उपयोगिता, भव्यता और सामाजिक प्रासंगिकता के क्षेत्र में एक नया मुकाम कायम किया है। जन्म से लेकर मृत्यु तक बॉस किसी न किसी रूप में मानव जीवन से जुड़ा हुआ रहता है। अपने बहुआयामी उपयोगों के कारण आज बॉस को व्यवसायों के क्षेत्र में हरा सोना कहा जाता है। भारत में करोड़ो व्यवसायी बॉस पर आधारित उद्योगों से जुड़े हुए हैं। आज विश्व भर में प्रतिवर्ष लगभग 50,000 करोड़ रुपये मूल्य के बॉस के बने कलात्मक उत्पाद बेचे जाते हैं। आने वाले वर्षों में यह राशि लगभग दुगुनी होने की प्रबल संभावना रखती हैं। इस कार्य में विभिन्न प्रदेशों के वन विभाग एवं अन्य संस्थान अपना योगदान प्रदान कर रहें है। आज इस संसथान में बॉसों से सम्बन्धित निम्नलिखित कार्य किये जा रहे हैं–

1. बॉसों की नई उपयुक्त वस्तुओं का चयन।
2. बॉसों की नवीन सामग्री का विकास।
3. बॉस के प्रति जागरुकता अभियान।
4. बॉसों के पौधों से कला बाजारों में उत्पादन का वितरण।
5. बॉस के द्वारा नवीन विधियों से सम्बन्धित व्यवसायों का प्रशिक्षण।
6. बॉसों में नए एवं लाभकारी उत्पादों जैसे– हस्तनिर्मित, सजावट की सामग्री, उपयोगी वस्तुएं, इंटिरियर डिजाइनिंग आदि का निर्माण करना।[10]

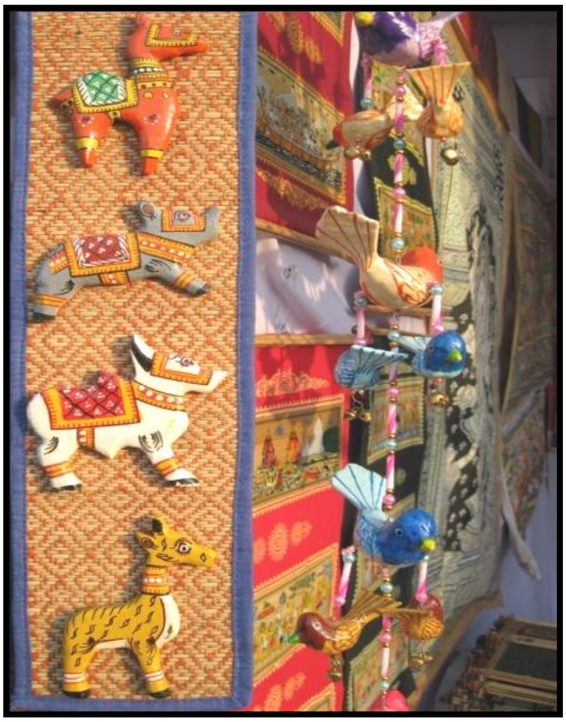

अध्ययन का उद्देश्य

1. अच्छी नियमित तथा स्थिर गुणवत्ता को बढ़ाना।
2. बॉसों की बहुलता वाले क्षेत्रों में बॉसों पर आधारित उद्योगों में विकास करना।
3. भारत में बॉसों को काटने–छॉटने वाली मशीनों को उपलब्ध कराना।
4. बॉसों को सुन्दर ढ़ालने के बाद सम्भालने की प्रक्रिया का उपयोग करना।
5. वैज्ञानिक विधियों से बॉसों की नियमित कटाई से सुन्दर वस्तुओं का निर्माण करना।
6. कटे हुए बॉसों को फिर से नवीन आकृति में ढाल कर बनाने की इच्छा रखना।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

निष्कर्ष

आज शहरों में विकसित नव उद्योगों के वैज्ञानिक प्रयोगों से यह धनोपार्जन का एक नया तरीका भी बन रहा है तथा बॉस जैसे श्रोतों का समुचित प्रयोग व्यवसायीकरण में हो रहा है। साथ ही यह भी प्रयास किया जा रहा है कि बॉस से बना हुआ एक ऐसा संग्रहालय भी बनाया जाना चाहिये, जिसमें बॉसों से जुड़ी प्रत्येक वस्तु को रखा जाए तथा इनकी बढ़ती उपयोगिता के दर्शन एक ही छत के नीचे करवाया जा सकें, ताकि भावी पीढ़ी इसका लाभ उठाकर ज्ञान अर्जित कर सकें। जिससे उसके शोध में सहायता मिल सके। यह उदाहरण हमारे कला व्यवसायों के उत्पादन में जीवन पर बॉस के प्रभाव को बखूबी दर्शाता है तथा अध्ययन का उद्देश्य इस प्रकार स्पष्ट है–

1. अच्छी नियमित तथा स्थिर गुणवत्ता को बढ़ाना।
2. बॉसों की बहुलता वाले क्षेत्रों में बॉसों पर आधारित उद्योगों में विकास करना।
3. भारत में बॉसों को काटने–छॉटने वाली मशीनों को उपलब्ध कराना।
4. बॉसों को सुन्दर ढ़ालने के बाद सम्भालने की प्रक्रिया का उपयोग करना।
5. वैज्ञानिक विधियों से बॉसों की नियमित कटाई से सुन्दर वस्तुओं का निर्माण करना।
6. कटे हुए बॉसों को फिर से नवीन आकृति में ढाल कर बनाने की इच्छा रखना।
7. सरकारी एवं गैर–सरकारी विभागों में बॉसों के प्रति सहायता प्रदान करना।[11]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *स्वयं सर्वेक्षण के आधार पर 20–11–2013*
2. *नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश व्यापार प्रोत्साहन प्राधिकरण, हस्तशिल्प सहायक भारत सरकार पृष्ठ सं. 115–120*
3. *समकालीन कला अकादमी, जुलाई– 2005, अक्टूबर, अंक 27, पृष्ठ सं. 30–40*
4. *www.iiaonline.in*
5. *U.P. Exports News Letter, July*
6. *स्वयं सर्वेक्षण के आधार पर 10–08–2012*
7. *नई दिल्ली, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार पत्रिका, पृष्ठ सं. 24–27*
8. *कृष्णन, डॉ. के.एस., नई दिल्ली–जनवरी–2009 राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्त्रोत, विज्ञान प्रगति– पृष्ठ सं. 20–24*
9. *शर्मा, प्रदीप, चन्डीगढ़, जनवरी–2012 विज्ञान प्रगति, केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण, पृष्ठ सं. 28–39*
10. *नई दिल्ली, मई–2011 वर्ष–55, अंक–5, योजना, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ सं. 1–15*
11. *हस्तकला व्यवसायों के संलग्न में विभिन्न व्यवसायों से साक्षात्कार। 16.11.2018*